National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 68-71

वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में समायोजन के संदर्भ में आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

डॉ० सतनाम सिंह[1]

Ph.D. (Education), Chaudhary Charan Singh University, Meerut, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना

शिक्षा में भी समय के अनुसार क्रॉति लाई जानी चाहिए। जन तथा समाज की बदलती आवश्कताओ के अनुसार जीवन के नए उद्देश्यो की स्थापना की जानी चाहिए। यह सब शिक्षा आधुनिक शिक्षा ही लोगो समाज तथा राष्ट्र के आधुनिकीकरण मे सहायक होगी सामान्यतः परिवर्तन की प्रक्रिया को आधुनिकीकरण कहते है। यह प्रकिया परम्परापवरदी समाज को ऐसे समाज में परिवर्तन करने का प्रयास करती है। जिसका आधार विज्ञान एंव टैक्नॉलोजी हो। आधुनिकीकरण एक ऐसी प्रकिया हे जो पुराने परम्पावादी समाज एंव राष्ट्रो को सामाजीक आर्थिक नैतिक घार्मिक एंव शिक्षा के ढांचो तथा मूल्यो अभिप्रेरणाओ में वाछित परिवर्तन किये जाते है इसमे पुराने विचारो के स्थान पर नये विचार निरूपति किये जाते है। किसी भी सामाजिक व्यवस्था में नये विचार निरूपति किये जाते है। किसी भी सामाजिक व्यवस्था में नये परिवर्तनो को जन्म देना और उन्हे विवेकपूर्ण आत्मसात करने की क्षमता रहती है। इसमें स्थिति विशंष के अनुसार योग्य एंव अयोग्य तथा उचित एंव अनुचित में अन्तर करने का विवेक निहित है। आधुनिकीकरण द्वारा भौतिक एंव अभौतिक संस्कृति में स्वीकरात्मक परिवर्तन किये जाते है। आधुनिकीकरण का अर्थ प्राचीन मूल्यो को उखाड कर फैकना नही है।

बलैक बेलेह के अनुसार आधुनिकीकरण एक सामाजिक प्रणाली की इससे भीतर एंव बाहर से सूचानाओ पर प्रक्रिया की क्षमता में वृद्धि करना है। आधुनिकीकरण को पश्चिमीकरण औद्योगिकरण शहरीकरण धर्मनिरपेक्षीकरण लोकतन्त्रीकरण शिक्षा के व्यावासयीकरण आदि के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है प्रत्येक चीज मे यह आधुनिक है। और इसका प्रयास आधुनिकता तक पहुंचाना है। इसमें सार्वजनिक भाईचारा सांसारिक धर्मो की तरह मानवता अन्तर्राष्ट्रीय मेलजोल आदि शामिल है।

विद्यार्थी ही राष्ट्र एवं समाज के भावी कर्णधार है। वे ही देश का भविष्य है। यदि विद्यार्थी आधुनिकीकरण के प्रति अपना समयोजन नही कर पाते तो यह समस्याग्रस्त बात है। तो कल हमारा भविष्य समस्याग्रस्त हो सकता है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है। कि हम विद्यार्थियो में समयोजन के संदर्भ में आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया जाये तोशनीवाल ने विदर्भ क्षेत्र के छात्रो के विद्यार्थियो में आधुनिकीकरण के प्रति अधिक ललायित होने से उनमें समाज एसे जुडो समस्यो का अधिक बोध होता है। अर्थात समायोजन से संबंधि समस्याओ का दृष्टिपात होता है। परिस्थितियो तथा वातावरण के साथ अपने व्यवहार का पूर्ण रूप से सामजस्य स्थापित किया जाना समायोजन कहलाता है। समायोजन के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन को पूर्ण रूप से जीने का प्रयास करता है। उसका जीवन तभी पूर्ण होता है। ज बवह अपने वातावरण के साथ पूर्ण रूप से समायोजन स्थापित कर लेता है। समायोजन के महत्वो का विभिन्न प्रकार से प्रभाव पडता है। आधुनिकीकरण के कारण लोगो के जीवन स्तर में खान–पान में और रहने के स्तर आदि में परिवर्तन आया है। आज के समाज में समायोजन एक महत्वपूर्ण तत्व है। इसी के द्वारा व्यक्ति अपने आप को हर स्थिति मेंढाल लेता है। समयोजन द्वारा व्यक्ति अपनी आश्यकताओ और अपनें वातावरण के बीच संतुलन स्थापित कर पाता है। अथवा नही इस शोघ से शोघकत्री कर मानना है। कि विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण का उनके समायोजन को समझने में शिक्षा जगत को सहयोग प्रदान कर सकेगी।

समस्या कथन

वरिष्ठ विद्यालय के विद्यार्थियो में समायोजन के संदर्भ में आधुनिकीकरण के प्रति दृष्टिकोण का अधयंयन। "A study of Attitude of Adolescents towards Modernization in Relation to Adjudtment of senior schools students"

अध्ययन में प्रयुक्त भाब्दावली

समयोजन : गेंटस के अनुसार समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रकिया है। जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण कि बीच संतुलन स्थपित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। सभी प्रकार की आवश्यकताओं के साथ सामायोजन के द्वारा ही मनुष्य का सर्वागीण विकास संभव है। शिक्षा द्वारा समायोजन सरलता के साथ किया जा सकता है। यही शिक्षा द्वारा सामायोजन सरलता है। शिक्षा वह प्रकिया है। जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। शिक्षा व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियो में मार्ग दिखाकर समायांजित करती है।

आधुनिकीकरण

मूरै के अनुसारः आधुनिकीकरण का अर्थ ऐसा क्रांतिकारी परिवर्तन है। जो परम्परावादी समाज को विकसित आर्थिक रू॰ से सम्पन्न और राजनीतिक रूप से अपेक्षाकृत अधिक स्थिर समाज में परिणत करता है। आधुनिक समाज का महत्व विज्ञान पर आधारित तकनीको को अपनाना है। इसी के आधार पर समाज ने अपने उत्पादन में शानदार वृद्वि की है। विज्ञान पर आधारित तकनीकी सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के अन्य मुख्य उपयोग है। और इसमें मूलभूत सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन आतें हैं। जिन्हे आधुनिकीकरण की संबा दी जाती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. समायोजित एंव कुसमायोजित विद्यार्थियो में आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
2. सरकारी विद्यालय के समायोजित व कुसमायोजित विद्यार्थियो में आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।
3. गैर सरकारी विद्यालय के समायोजित व कुसमायोजित विद्यार्थियो में आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

1. समायोजिक व कुसमायोजित विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति में कोई अतंर नही होता है।
2. सरकारी व कुसमायोजित विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति में कोई अन्तर नही होता है।
3. गैर–सरकारी विद्यालय के समायोजिक व कुसमायोजित विद्यार्थियो के प्रति अभिवृति में कोई अन्तर नही होता है।

शोधविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकंत्री ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर सर्वेक्षण कार्य किया क्योकि सर्वेक्षण विधि एक वैज्ञानिक एवं सार्थक विधि है। तथा शोध की प्रकृति एवं उद्देश्यो के अनुसार सटीक भी है।

न्याद

प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकत्रीं ने कुरूक्षेत्र जिले के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न (सरकारी +गैर सरकारी) वरिष्ठ विद्यालयो में अध्ययन कर रहे 200 विद्यार्थियो को चुना।

प्रस्तुत उपकाणो के नाम

क.सं.	परीक्षण का नाम	निर्माणकर्ता
1.	समायोजन अनुसूची	डॉ. पैनी. जैन
2.	आधुनिकीकरण अनुसूची	एय. पी. आहलुवालिया ए.के. कालियाा

प्रस्तुत सांख्यिकीय विधियॉ

सांख्यिकी अनुसांधन का मूल आधार है। प्रस्तुत भोध हेतु जिन सांख्यिकी विधि की सहायता ली गई है। उनकी जानकारी यहॉ दी जा रही है।

1. मध्यमान (Mean)
2. मानक विचलन (S.D.)
3. क्रांतिक अनुपात (C.R. Value)

df=N1+N2-2=50+50-2=98

परिकल्पनाओ के अनुसार समंको का सारणीयन एंव विलेषण देखे तालिका 1

विवेचनः समायोजिक एंव कुसमायोजित विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के चतुर्थ आयाम महिलाओ का स्तर और षष्ठ आयाम धंम में सार्थकता स्तर 0.01 पर अंतर पाया गया मध्यमानो के अवलोकन से स्पष्ट होता है। कि समायोजिक वर्ग के विद्यार्थियो की तुलनात्मक में अधिक सकरात्मक दृष्टिकोण पाया गया उनमें शिक्षा विवाह आदि आयामों में अधिक आधुनिक विचार है। समायोजिक एवं कुसमायोजित विद्यार्थियो के आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के जनसम्पर्क संबंध में 0.05 स्तर पर और धर्म आयाम 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नही पाया गया अर्थात समायोजिक वर्ग के विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के आयाम जनसम्पर्क तुलानात्मक रूप उच्च आधुनिक विचार रखते है। परन्तु 0.01 स्तर ऐसा नही पाया गया आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के शेंष आयामो में कोई अन्तंर नही पाया गया।

df=N1+N2-2=50+50-2=98

समायोजिक एंव कुसमायोजित विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के प्रथम आयाम शिक्षा द्वितीय आयाम जनसम्पर्क सम्बन्ध तृतीय आयाम राजनीतिक पंचम आयाम विवाह सप्तम आयाम सामाजिक आर्थिक कारक में सार्थकता स्तर 0.01 पर अंतर पाया गया। मध्यमानो के अवलोकन से स्पष्ट होता है। कि समायोजिक वर्ग के विद्यार्थियो में आधुनिकीकरण के प्रति तुलानात्मक अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया उनमे शिक्षा विवाह आदि आयामो में अधिक आधुनिक विचार है। समायोजित एंव कुसमायोजित विद्यार्थियो के आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के जनसम्पर्क संबंध में 0.05 पर और धंम आयाम में 0.05 महिलाओ का स्तर 0.05 सामाजिक आर्थिक कारक पर सार्थक नही पाया गया मध्यमानो के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है। कि समायोजिम वर्ग विद्यार्थियो में आधुनिकीकरण के प्रति तुलानात्मक अधि सकरात्मक अभिवृति पाई गई। उनमे शिक्षा जन सम्पर्क संबंध राजनीतिक विवाह सामाजिक आर्थिक कारक आदि आयामो में अधिक आधुनिक विचार है। समायोजित आर्थिक कारक आदि आयामो में अधिक आधुनिक विचार है। समायोजिक वर्ग के विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के आयाम आधुनिक विचार रखते है। परन्तु 0.01 स्तर ऐसा नही पाया गया। आधुनिकीकरण के प्रति अभिवति के शेष आयामो में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

0.01 स्तर ऐसा नही पाया गया। आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के शेष आयामो में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

समयोजित एवं कुसमायोजित विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के प्रथम आयाम शिक्षा तिर्य आयाम जनसम्पर्क सम्बन्ध तृतीय आयाम राजनीतिक षष्ठ आयाम धर्म में सार्थकता स्तर 0.01 पर अतंर पाया गया मध्यमानो के अवलोकन से स्पष्ट होता है। कि समायोजित वर्ग के विद्यार्थियो में आधुनिकीकरण के प्रति तुलानात्मक अधिक साकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया उनमें शिक्षा जनसम्पर्क संबंध राजनीति धर्म आदि आयामो में अधिक आधुनिक विचार है। समायोजित एवं कुसमायोजित विद्यार्थियो के आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के जनसम्पर्क संबंध में 0.05 पर और धर्म आयाम 0.05 महिलाओ का स्तर 0.05 सामाजिक आर्थिक कारक पर सार्थक अंतर नही पाया गया मध्यामानो के अवलोकंन से स्पष्ट होता है। कि समायोजित वर्ग विद्यार्थियों में आधुनिकीकरण के प्रति तुलनात्मक अधिक सकरात्मक अभिवृति पाई गई उनमें शिक्षा जन सम्पर्क संबंध रानीतिक विवाह सामाजिक आर्थिक कारक आदि आयामो में अधिक आधुनिक विचार है। समायोजित वर्ग के विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के आयाम आधुनिक विचार रखते है। परन्तु 0.01 स्तर ऐसा नही पाया गया आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के शेष आयामो में कोई अन्तर नही पाया गया।

तालिका 1: समायोजिक एंव कुसमायोजित वर्ग के विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के सात आयामों के मध्यमानों के अंतरो की सार्थकता की तुलना

आयाम	समूह का प्रकार	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	प्रमाप विचलन	व्रातिक अनुपात मान	सार्थकता का स्तर	
						0.05	0.01
शिक्षा	समायोजित विद्यार्थी	50	24.48	4.45	7.27	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	19.53	5.16			
जनसम्पर्क सम्बन्ध	समायोजित विद्यार्थी	50	24.51	3.22	6.15	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	20.28	6.08			
राजनीति	समायोजित विद्यार्थी	50	22.73	3.31	2.505	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर नही है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	21.14	5.51			
महिलाओं का स्तर	समायोजित विद्यार्थी	50	22.42	3.42	2.125	सार्थक अंतर नही है	सार्थक अंतर नही है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	20.95	6.01			
धर्म	समायोजित विद्यार्थी	50	22.73	4.13	4.442	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	19.93	4.76			
विवाह	समायोजित विद्यार्थी	50	24.66	4.40	0.304	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	24.44	5.74			

आयाम	समूह का प्रकार	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	प्रमाप विचलन	अनुपात मान	सार्थकता का स्तर	
						0.05	0.01
शिक्षा	समायोजित विद्यार्थी	50	36.36	5.49	18.01	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	16.86	5.50			
जनसम्पर्क सम्बन्ध	समायोजित विद्यार्थी	50	10.00	4.21	3.651	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	20.92	4.50			
राजनीति	समायोजित विद्यार्थी	50	24.68	3.11	4.753	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	20.00	6.12			
महिलाओं का स्तर	समायोजित विद्यार्थी	50	22.92	3.11	0.996	सार्थक अंतर नही है	सार्थक अंतर नही है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	22.08	5.09			
धर्म	समायोजित विद्यार्थी	50	20.82	3.67	2.121	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	22.82	5.57			
विवाह	समायोजित विद्यार्थी	50	22.44	4.03	1.531	सार्थक अंतर नही है	सार्थक अंतर नही है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	21.22	3.94			
सामजिक आर्थिक कारक	समायोजित विद्यार्थी	50	25.57	4.19	0.438	सार्थक अंतर नही है	सार्थक अंतर नही है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	23.61	5.34			

आयाम	समूह का प्रकार	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	प्रमाप विचलन	व्रातिक मान अनुपात	सार्थकता का स्तर	
						0.05	0.01
शिक्षा	समायोजित विद्यार्थी	50	35.90	6.30	7.27	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	15.92	4.88			
जनसम्पर्क सम्बन्ध	समायोजित विद्यार्थी	50	24.86	4.69	6.621	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	18.14	5.43			
राजनीति	समायोजित विद्यार्थी	50	24.34	4.34	3.15	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	20.56	6.08			
महिलाओं का स्तर	समायोजित विद्यार्थी	50	22.54	3.53	3.90	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर नही है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	20.20	5.61			
विवाह	समायोजित विद्यार्थी	50	22.02	3.13	2.497	सार्थक अंतर नही है	सार्थक अंतर नही है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	21.08	6.48			
धर्म	समायोजित विद्यार्थी	50	23.02	4.25	0.923	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	18.64	5.19.			
सामजिक आर्थिक कारक	समायोजित विद्यार्थी	50	24.58	4.65	4.620	सार्थक अंतर है	सार्थक अंतर है
	कुसमायोजित विद्याथी	50	24.56	6.16			

निष्कर्ष

1. समायोजित वर्ग के विद्यार्थियो में आधुनिकीकरण के प्रति कुसमायोजित वर्ग के विद्यार्थियो की तुलना में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया उनमें शिक्षा विवाह आदि आयामो में अधिक आधुनिक विचार है।
2. साकारी विद्यालयो के समायोजित वर्ग के विद्यार्थियो में आधुनिकीकरण के प्रति कुसमायोजित वर्ग के विद्यार्थियो की तुलना में अधिक सकरत्मक दृष्टिकोण पाया गया। समायोजित एंव कुसमायोजित विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के प्रथम आयाम शिक्षा द्वितीय आयाम जन सम्पर्क सम्बन्ध तृतीय आयाम राजनीतिक पचंम आयाम विवाह सप्तम आयाम सामाजिक आर्थिक कारक में सार्थकता स्तर 0.01 पर अंतर पाया गया।

3. गैर साकारी विद्यालय के समायोजित एवं कुसमायोजित विद्यार्थियो की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृति के प्रथम आयाम शिक्षा द्वितीय आयाम जनसम्पर्क सम्बन्ध तृतीय आयाम राजनीतिक षष्ठ आयाम धर्म में सार्थकता स्तर 0.01 पर अंतर पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ

1. वर्मा प्रीति एवं श्री वास्तव डी एन आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2001, पृ. सं. 490.
2. हेनरी ई (1981) शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग ग्यारवा संस्करण, दिल्ली कल्याणी पब्लिकेशन।
3. पाण्डे रामशकल (2007) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, तृतीय संस्करण आगरा प्रकाशन विनोद पुस्तक मंदीर आगरा।
4. राय परस नाथ (2008) अनुसंधान परिचय, आगरा, द्वादशम संस्कारण प्रकाशन लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
5. तेजस्विनी अनिल कदम (2004) मासिक भारतीय शिक्षण।
6. देखपांडे के. ना. (2003) ते (2005) पालक संघ प्राथमिक शिक्षण का दर्जा, मासिक शिक्षण समिक्षा।
7. बेहेरे सुमन (2004) सामाजिक संशोधन नागपुर विद्या प्रकाशन।